डा. जी. एस. शेखावत

निदेशक (अगस्त, 1994 से जनवरी, 2002 तक)

डॉ गिरधारी सिंह शेखावत का जन्म 9 जुलाई, 1941 को तुर्कियावास, राजस्थान में हुआ था। आप की प्रारभिक शिक्षा स्थानीय विद्यालय से हुई तत्पश्चात आप ने वर्ष 1964 में उदयपुर विश्वविद्यालय से स्नातक तथा वर्ष 1966 में भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली से स्नातकोत्तर (कृषि) तथा वही से 1970 में स्वर्ण पदक के साथ डी.एन. श्रीवास्तव के मार्गदर्शन में पीएचडी की उपाधि प्राप्त की। आपने पोस्ट डॉकटोरल शोध स्कॉटिश क्रॉप रिसर्च इंस्टीट्यूट, डन्डी, स्कॉटलैंड में नौ महीनों (नवंबर, 1984 से जुलाई, 1985) एंव इंस्टीट्यूट ऑफ फाईपैथैथोलॉजी, ग्योर्ड एग्स्टस यूनिवर्सिटी, गौटिंगेन, पश्चिम जर्मनी से भी नौ महीने (जनवरी-सितंबर 1976) के लिए किया।

डॉ शेखावत ने 1968 में भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली में सहायक बैक्टीरियोलॉजिस्ट के रूप में अपना कैरियर शुरू किया और 1972 तक उसी पद पर बने रहे। वर्ष 1972 में आप वैज्ञानिक एस-2 के रूप में केन्द्रीय आलू अनुशंधान संस्थान, शिमला को जॉइन किए तथा 1975 में 34 वर्ष की छोटी उम्र मे ही आप इसी संस्थान के प्लांट पैथोलॉजी विभाग के प्रमुख बने। तब से, आपने इस संस्थान के विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और नवंबर 1995 में इसके निदेशक बने। आप भारतीय आलू संघ (1993-94, 1998-99, 2000-2001) व इंडियन फाइटोपैथोलॉजिकल सोसाइटी (2001) के अध्यक्ष; वर्ष 1983-84 के दौरान भारतीय आलू संघ के जर्नल के मुख्य संपादक (एडिटर-इन-चीफ) रहे। साथ ही कई प्रतिष्ठित राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय समितियों जैसे नेशनल एकेडमी ऑफ एग्रिकल्चरल साइंसेज के फेलो; प्लांट पैथोलॉजी पर आईसीएआर वैज्ञानिक पैनल; फसल मानकों के लिए सरकार भारत की केंद्रीय उप-समिति, सिप (सीआईपी), लीमा पेरू के बैक्टीरिया रोगों पर भविष्य कार्य योजना तैयार करने के लिए कार्य समूह पर बनी ग्लोबल इनिशिएटिव के लिए संचालन समिति; नॉर्थ कैरोलिना स्टेट यूनिवर्सिटी, संयुक्त राज्य अमेरिका के बैक्टीरियल विल्ट पर भविष्य की कार्य की पहचान के लिए कार्य समूह के भी आप सदस्य रहे। आप ने दिसंबर, 1999 में आलू पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन तथा 1993 में आलू के बैक्टीरियल विल्ट पर अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन किया। जुलाई, 2001 में अपनी सेवानिवृत्ति के बाद, आप आईसीएआर के वैज्ञानिक एमरिटस बन गए और राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर में अनुसंधान कार्य किए।

डा. शेखावत ने आईएआरआई, नई दिल्ली में एटीओलोगी, महामारी विज्ञान, हिस्टपाथोलॉजी, आम के बैक्टीरिया के कैंकर के प्रतिरोध, चावल की जीवाणु पत्ती की लकीर और नली पर बहुत ही स्रहानीय कार्य किया। केन्द्रीय आलू अनुसंधान संस्थान, शिमला में शामिल होने के बाद, आपने आलू के जीवाणु रोगों पर मूल अनुसंधान की शुरुआत की और वर्ष भर में एक अत्याधुनिक बैक्टीरोजूलॉजी प्रयोगशाला की स्थापना की। इस प्रयोगशाला से उन्होंने एटियलजि, महामारी विज्ञान, निदान और बैक्टीरियल विल्ट, सॉफ्ट सॉट, सामान्य स्काब और माइकोप्लाज्मा जैसे जीवों में बीमारियों के प्रबंधन करने पर पथ-ब्रेकिंग प्रयोग किया तथा बिखरे हुए प्रायोगिक प्रमाणों को प्रभावी बीमारी प्रबंधन कार्यक्रमों में एक नीश्चित आयाम दिया, जो आज की बेंचमार्क सिफारिशें हैं। सीपीआरआई के निदेशक के रूप में, आप ने संसाधनों के एकीकरण, अनुसंधान सुविधाओं के आधुनिकीकरण, मानव संसाधन विकास, अनुसंधान और उत्पादन संबंधों के विकास, बेहतर आलू की किस्मों का विकास, प्रसंस्करण प्रौद्योगिकियों का विकास, फसल मॉडलिंग, बीज उत्पादन प्रणाली में सुधार आदि के लिए बेहद महतावपूर्ण योगदान दिया। डॉ शेखावत मानवीय प्रयास के हर पहलू में उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए "सादगी सबसे अच्छी नीति है" का एक स्पष्ट उदाहरण है। केन्द्रीय आलू अनुसंधान संस्थान को अपने उदघाटन वर्ष में सर्वश्रेष्ठ आईसीएआर संस्थान पुरस्कार मिला, जो आपके प्रबंधकीय कौशल का केवल प्रतिबिंब है। आपको 1970 में एमएसी में उच्चतम अंक हासिल करने के लिए आईएआरआई-स्वर्ण जयंती पदक और सुनीताबाला रायचौधरी पदक से नवाजा गया। 1998 में आपको रामानुजम मेमोरियल पुरस्कार; 1997 में डॉ मुंदक मेमोरियल पुरस्कार; 2000 में प्रो एन प्रसाद मेमोरियल पुरस्कार; सीपीआरआई गोल्डन जयंती वर्ष पुरस्कार 2000; और सब से ऊपर आलू अनुसंधान पर आप के जीवन काल की उपलब्धि के लिए वर्ष 2000 में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के प्रतिष्ठित रफी अहमद किदवई पुरस्कार दिया गया। आपने राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय पत्रिकाओं में 250 से अधिक वैज्ञानिक लेख प्रकाशित किए और पांच पुस्तकों का संपादन किया।

डा. शेखावत का देहावसान 09.1.2007 को हो गया और आलू अनुसंधान के एक स्वर्णिम युग का अंत भी हुआ।